International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 27-31

नरेन्द्र कोहली के रामकथात्मक उपन्यास : एक विवेचनात्मक अध्ययन

रेखा रानी

शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत।

सरांश

भारतीय पुराकथाएं अपनी काजलयी चेतना के कारण सहस्त्रों वर्षों से भारतीय साहित्य की समस्त विधाओं में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहीं हैं। भारतीय आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य भी पौराणिक रचनाओं के मोह से खुद को मुक्त रखने में अक्षम रहा है। 'राम' और 'कृष्ण' के पुराकथाओं को नवीन कलेवर देकर एवं अद्यतन प्रासंगिकता के साथ प्रस्तुत करके, हिन्दी उपन्यास साहित्य को नवीन आयाम प्रदान करने वाले 'डा0 नरेन्द्र कोहली जी' ने इन पौराणिक आख्यानों पर आधृत रचनाओं को मिथकीय रचनाओं की श्रेणी में ला खड़ा कर दिया है। राम की पौराणिक कथा पर आधृत उनकी 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' एवं 'युद्ध' उपन्यास; 'अभ्युदय' के दो भागों में संकलित हैं तथा किसी भी भाषा में 1800 पृष्ठों मे लिखी गई प्रथम, एक वृहद् उपन्यास है जो पौराणिक होते हुए भी यथार्थ की पृष्ठभूमि पर रचित है। अन्य उपन्यासकारों से भिन्न दृष्टिकोण रखते हुए 'कोहली जी' ने अपने रामकथात्मक उपन्यासों में रामकथा की महानता, कथा के पात्रों की मानवीय क्षमता, तद्युगीन मानवीय दृष्टिकोण इत्यादि सभी को स्वीकार किया है। किन्तु, इसके साथ ही राम के पुरातन कथाओं में स्थित अलौकिकता एवं चमत्कारिता को मुक्त करवाते हुए, मूल रामकथा के पात्रों एवं संदर्भों को मानवीय धरातल पर देखने का प्रयास किया है। इतना ही नहीं इन चारों उपन्यासों में समकालीन स्थितियों को गहरी संवेदनशीलता और गहन चिंतन के साथ प्रस्तुत करते हुए; परम्परागत रामकथा को आधुनिक संचेतना के आलोक में तर्क–संगत पुनर्व्याख्या द्वारा नवीन अर्थ और सर्जनात्मक रूप देने का भी प्रयास किया गया है। 'राम' का 'विश्वामित्र' से धर्म का दीक्षा लेना, दीक्षित हो वन जाना, वन में राक्षसों से संघर्ष करना और फिर युद्ध कर जनता का अभ्युदय करने तक की संपूर्ण कथा को 'अभ्युदय' उपन्यास– श्रृंखला में न सिर्फ क्रमबद्ध तरीके से संजोया गया है अपितु, इस संपूर्ण कथा के माध्यम से आधुनिक पाठकों के समक्ष युगचेतना को प्रतिबिम्बित एवं विश्लेषित कर पाठकों को अपने युग–चेतना को देखने, पहचानने एवं युग सत्य से मिथकीय सत्य की तुलना करने का अवसर प्रदान किया गया है। एक ओर जहाँ विश्वामित्र के आश्रम में राक्षसों के उत्पात से लेकर राम–सीता का विवाह एवं परशुराम की पराजय तक की रामायणी कथा को संजोये 'दीक्षा' उपन्यास में राम के युग के राजनीतिक व्यवस्थाओं, जन सामान्य के शोषण, समाज में नारी का स्थान, जाति–वर्ण की विभीषिकाओं, स्त्री–पुरुष संबंध, स्वार्थी बुद्धिजीवियों एवं शासनाधिकारियों की मानसिकता आदि विषयों को समकालीन संदर्भों के साथ समन्वयात्मक रूप देने का प्रयास किया गया है। वहीं, 'अवसर' उपन्यास के माध्यम से आज के युग की मुख्य समस्याओं को उजागर किया गया है। 'दंडकवन' से 'पंचवटी' तक की कथा को संजोये 'संघर्ष की ओर' उपन्यास भी 'राम' के पौराणिक कथाओं मे वर्णित घटनाओं का तर्कसंगत, बुद्धिवादी, समाजशास्त्रीय, राजनैतिक और ऐतिहासिक विश्लेषण; आधुनिक ढ़ग से करता है। इसी तरह 'युद्ध' उपन्यास 'किष्किंधा कांड' से लेकर 'लंका कांड' तक की कथा के अतिमानवीयता एवं अलौकिकता को पूर्ण रूप से तिरस्कृत कर, उन कथाओं को लौकिक, तर्कसंगत एवं मानवीय आधार पर व्याख्यायित करते हुए ; राम–रावण को समकालीन संदर्भ में पूंजीवादी व्यवस्था के प्रति शोषितों के स्वातंत्र्य युद्ध के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार 'कोहली जी' की रामकथात्मक उपन्यास पौराणिक होते हुए भी; चिर नवीन है। इसकी कथावस्तु आधुनिक पाठकों को पौराणिक से आधुनिक तक की यात्रा करवाती है।

मूल शब्द: काजलयी चेतना , यथार्थ, प्रासंगिकता , समकालीन, मिथकीय , अभ्युदय, दीक्षा।

1. प्रस्तावना

भारतीय पुराकथाएं अपनी कालजयी चेतना के कारण सहस्त्रों वर्षों से भारतीय साहित्य की समस्त विधाओं में किसी न किसी रूप में उपस्थित रहीं हैं। यही कारण है कि भारतीय आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य भी इन पौराणिक रचनाओं के पात्रों, कल्पनाओं से अपने को मुक्त नहीं कर पाया है। इन पौराणिक रचनाओं को 'मिथकों' की श्रेणी में स्थान दिया गया है। पौराणिक रचनाओं के प्रति साहित्यकारों के दृष्टिकोणों में अंतर पाया जाता है। कोई पौराणिक पात्र को उसकी अलौकिकता, अतिमानवीयता के कारण अवतारी व्यक्ति के रूप में दर्शाता है एवं साथ ही उसके प्रति भक्ति की भावना प्रकट करता है। तो कोई साहित्यकार, पौराणिक कथा को साहित्यिक महत्त्व के रूप में अपनाता है। वहीं दूसरा अपनी रचनाओं में उसे कोरी कल्पना मानकर, अंधविश्वास को प्रोत्साहित करता दिखता है।

अन्य साहित्यकार उन पौराणिक कथाओं और पात्रों को आदर भाव के साथ अपनाते है; तो कोई काल्पनिक होते हुए भी कथा की स्रष्टा अपनी कल्पना शक्ति से कर ,उसे कालजयी दृष्टिकोण से देखने की कोशिश करता है। इस तरह सभी अपनी–अपनी दृष्टि से पौराणिक पात्रों एवं प्रसंगों का प्रयोग अपनी रचनाओं में करते हैं। पौराणिक रचनाओं के प्रति 'नरेंद्र कोहली जी का दृष्टिकोण' अन्य कई उपन्यासकारों के दृष्टिकोण से भिन्न दिखता है। कोहली जी ने अपनी रामकथा पर आधृत उपन्यास 'अभ्युदय' में इनमें से अनेक विशेषताओं का समाहार किया है। कथा की महानता, पात्र की मानवीय क्षमता, तद्युगीन मानवीय दृष्टिकोण आदि को स्वीकार करते हुए; इन्होंने अपनी रचनाओं में 'राम' और 'कृष्ण' जैसे पुरातन कथाओं को अलौकिकता और चमत्कारिता से मुक्त कर, उनके पात्रों और संदर्भों को मानवीय धरातल पर देखने का प्रयत्न किया है।

''नरेंद्र कोहली जी' ने रामकथा पर आधृत पाँच उपन्यास लिखें हैं– 'दीक्षा' (1975), 'अवसर' (1976), 'संघर्ष की ओर' (1978) और 'युद्ध' भाग–1 एवं 'युद्ध' भाग–2 (1979)। ये सभी उपन्यास स्वतंत्र रूप से प्रकाशित हुए हैं। बाद में 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' इन तीन उपन्यासों को एकीकृत कर 'अभ्युदय'–1 और वहीं 'युद्ध' (भाग–1 एवं भाग–2) को एकीकृत कर 'अभ्युदय'–2 नाम से प्रकाशित किया गया।''[1]

'कोहली' द्वारा लिखी गई ये पाँचों उपन्यास रामकथा पर आधृत हैं; जिसमें रामकथा के पौराणिक प्रसंगों एवं मूल्यों की युगानुकूल, तर्कसंगत, व्यवहारिक एवं आधुनिक व्याख्या की गई है। स्वयं कोहली जी अपने इन उपन्यासों को ''रामकथा की पुनर्व्याख्या''[2] कहते हैं। ''अभ्युदय उपन्यास के अध्ययन से रामकथा की गहनताओं को जानने का अवसर मिलता है।''[3] इन पाँचों उपन्यासों में समकालीन स्थितियों और सरोकारों को गहरी संवेदनशीलता और गहन चिंतन के साथ प्रस्तुत करते हुए, परम्परागत रामकथा को आधुनिक संचेतना के आलोक में तर्क–संगत पुनर्व्याख्या द्वारा नवीन अर्थ और सर्जनात्मक रूप देने का प्रयास किया गया है।

'कोहली जी' की रामकथा में राम विश्वामित्र से जन– कल्याण की मंत्रदीक्षा प्राप्त करके वन जाने के अवसर की प्रतीक्षा करते दिखाई देते हैं और कैकयी के दो वरों के माध्यम से उन्हें जब वन जाने और पीड़ित जनता का नेतृत्व करने का अवसर मिलता है, तब संघर्ष होता है और अंततः युद्ध होता है। जहाँ राम द्वारा राक्षसी शक्तियों का अंत होकर, जनता का अभ्युदय होता है। इस प्रकार विश्वामित्र से दीक्षित होने, दीक्षित हो वन जाकर राक्षसों से संघर्ष और फिर युद्ध कर जनता का अभ्युदय करने तक की इस संपूर्ण कथा को 'नरेंद्र कोहली जी' ने अपने पाँचों रामकथात्मक उपन्यास को 'अभ्युदय' उपन्यास–श्रृंखला में क्रमबद्ध तरीके से संजोया है।

'नरेंद्र कोहली जी' के पहले उपन्यास 'दीक्षा' की विषयवस्तु मे विश्वामित्र के सिद्धाश्रम में राक्षसों के उत्पात से लेकर राम के विवाह और परशुराम की पराजय तक की कथा वर्णित है, जिसे उन्होंने एक नयी दृष्टि से ; एक नये रूप में प्रस्तुत किया है। समूचे विशाल 'जंबूद्वीप' में हो रहे राक्षसी उत्पात और उसके परिणामस्वरूप सद्मूल्यों के हनन और राक्षसी मूल्यों के भयावने आतंक के विस्तार को दखने और उसका प्रतिरोध करने की दीक्षा ऋषि 'विश्वामित्र' ने 'राम' को दी थी। इस कथा के विभिन्न प्रसंगों में से गुजरते हुए 'कोहली जी' ने विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं, जन–सामान्य के शोषण, बुद्धिजीवियों के कर्त्तव्य, समाज मे नारी का स्थान, स्त्री–पुरूषों के संबंध, जाति, वर्ण की विभीषिकाओं, लोलुप और स्वार्थी बुद्धिजीवियों, शासनाधिकारियों की मानसिकता आदि विषयों का मनोवैज्ञानिक आख्यान प्रस्तुत करने के साथ–साथ उनका विश्लेषण किया है। इस प्रकार 'दीक्षा' उपन्यास में अपनी मान्यताओं के सहारे एक प्रख्यात कथा को पूर्णतः मौलिक एवं आधुनिक उपन्यास के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में 'कोहली जी' ने आधारिक कथावस्तु के रूप में 'राम–विश्वामित्र' की जनकपुर यात्रा तथा मुख्य कथा के विकास के लिए प्रासंगिक कथावस्तु को लिया है; जिसकी उद्भावना उन्होंने अपनी कल्पना द्वारा की है, किन्तु इस कल्पना का उद्देश्य मात्र मुख्य कथा का विकास करना ही रहा है। उपन्यासकार 'नरेंद्र कोहली जी' ने 'दीक्षा' उपन्यास में रामकथा की पुनर्व्याख्या आधुनिक यथार्थ संदर्भों की सहायता से किया है। कोहली जी ने अपनी उपन्यास का शीर्षक 'दीक्षा' इसलिए रखा है क्योंकि इस खण्ड में 'श्रीराम' 'विश्वामित्र' से अस्त्र–शस्त्र के संचालन की दीक्षा लेते हैं। बाद में आगे चलकर वे 'परशुराम' से भी कुछ दिव्यास्त्रों की दीक्षा प्राप्त करते हैं।

राक्षसों के निरंतर उत्पात से जब 'विश्वामित्र' के सिद्धाश्रम और इसके आसपास के लोग बहुत त्रस्त और पीड़ित थे, तब विश्वामित्र इन अत्याचारों का विरोध करने के लिए नजदीक के शासक 'बाहुलाश्व' से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। किन्तु उन्हें सूचना मिलती है कि बाहुलाश्व के पुत्र और उसके साथियों ने ही 'गहन' नामक निम्न जाति के व्यक्ति पर अत्याचार किया है, उसकी पुत्रवधुओं का बलात्कार किया है। इस प्रकार 'डा0 कोहली जी' ने 'दीक्षा' उपन्यास के माध्यम से शासकों द्वारा अपनी सत्ता और ताकत का दुरूपयोग कर, जन सामान्य का शोषण करने की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है। इसके साथ ही, उन्होंने सवर्णो द्वारा निम्न जातियों पर होने वाले अत्याचार का भी वर्णन प्रस्तुत किया है।

दीक्षा में उपाचार्य 'अमितलाल' का 'अहिल्या' को व्यभिचारिणी कहकर विरोध करना तथा उनकों खुद आचार्य बनने के लिए षडयंत्र करते दिखलाना, कहीं न कही समाज के स्वार्थी और लालुप बुद्धिजीवियों की भ्रष्टता को पर्दाफाश करती है। इतना ही नहीं समाज को केन्द्र मानकर, उसके हित–अहित की भी चर्चा इस उपन्यास में की गई है और इसके साथ ही सामन्त वर्ग की नारियों की अकर्मण्यता, आभूषणों को प्रति उनकी ललक ,उनकी निष्क्रियता तथा उनकी अनुपयोगिता की बात भी की गई है।

'दीक्षा' में पात्र 'राम' मानव जैसे ही दिखते हैं, उन्हें किसी यज्ञ से उत्पन्न हुआ नहीं दिखाया गया है। काल्पनिक पात्र के रूप में 'पुनर्वसु' हैं, जो विश्वामित्र के आश्रम के व्यवस्थापक है। इसी तरह 'बहल्या', 'डूड़ी गाय' की कल्पना भी उपनयासकार द्वारा की गई है। 'डूंडी गाय' को स्नेह के प्रतिबिम्ब की तरह दिखाया गया है, जो सुख–दुःख में साथ देती है तथा औषधि के रूप में दूध देकर अहिल्या के पुत्र 'शतानंद' को बचाती है। दास्याभाव को भी उपन्यासकार ने अपनी कृति 'दीक्षा' उपन्यास में अनूठे ढ़ंग से उजागर किया है। तपस्विनी 'अहिल्या' के उद्धार करने के पश्चात् राम अनुज लक्ष्मण समेत अहिल्या के चरण स्पर्श करते हैं। इस कृति में 'बनजा' नारी भी अहिल्या की तरह समाज से बहिष्कृत हैं, जिसका उद्धार 'राम' करते हैं। 'बनजा' एक काल्पनिक पात्र है। 'अजगव परिचालन विधि' में भी डा0 कोहली ने आत्म विस्फोटक पदार्थ को रखकर मौलिकता दर्शाने का प्रयास किया है।

इस तरह इस 'दीक्षा' खण्ड में उपन्यासकार 'कोहली जी' ने पर्याप्त मौलिकता दर्शाने की कोशिश की है एवं अनेक काल्पनिक पात्रों की सृष्टि कर कथानक के संदर्भ में उसकी औपन्यासिक क्षमता का दिग्दर्शन कराने का प्रयास किया है। इस तरह दीक्षा उपन्यास में पौराणिक कथा–वृत को समकालीन संदर्भो के साथ समन्वयात्मक रूप देने का अथक प्रयास कोहली जी द्वारा किया गया है।

'अवसर' उपन्यास 'अभ्युदय' का दूसरा खंड है। इसकी आधारभूमि मूल रामकथा के 'अयोध्या कांड' की कथा है। 'दीक्षा' उपन्यास के समान ही 'अवसर' में रामकथा की युगानुरूप व्याख्या की गई है। साथ ही, इसे आधुनिक संदर्भ प्रदान किया गया है। इसमें राम–सीता के विवाहोपरांत से चित्रकुट प्रसंग तक की कथा को वर्णित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने चरितनायक 'राम' तथा अन्य पात्रों को मानवीय धरातल पर उतारकर, उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है। राम के वनवास की कथा को समाहित करती हुई इसकी कथावस्तु; मुख्यतः पौराणिक है। अभ्युदय' के 'अवसर' खण्ड की कथावस्तु में 'कोहली जी' ने अनेक मौलिक तथ्यों की उद्भावना की है। प्रस्तुत उपन्यास में अयोध्या की राजनीतिक उथल–पुथल में 'राम' को 'विश्वामित्र' की दीक्षा को व्यावहारिक रूप देने का अवसर प्राप्त होता है। 'दशरथ' जब अपनी सुरक्षा के प्रति आशंकित होकर, अत्यंत गोपनीय ढंग से राम के राज्याभिषेक की घोषणा करते हैं, तब 'कैकेयी' उन्हें दुःख पहुँचाने हेतु राम को चौदह वर्षो का वनवास दे देती है, किंतु वनगमन की सूचना पाकर 'राम' तनिक भी विचलित नहीं होते अपितु, वे 'लक्ष्मण' से कहते है– ''यह वनवास नहीं मेरे जीवन का 'अभ्युदय' है, संकीर्ण राजनीति से उबर, व्यापक मानवीय कर्त्तव्य निभाने का अद्वितीय अवसर है।''[4] इस प्रकार वन–गमन के द्वारा राम अयोध्या की संकुचित और स्वार्थी राजनीति से हटकर, दण्डकारण्य में राक्षसी शक्तियों को जन जागृति के माध्यम से संगठित करके, जनक्रांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में पौराणिक संदर्भों को युगीन व्याख्या प्रदान की गई है। राम के विचारों के माध्यम से 'रामराज्य' की अपनी परिकल्पना प्रस्तुत की गई है। रामकथा की जिन घटनाओं को सामान्य भारतीय विकास, आस्था और देवीय

स्फुरण की दृष्टि से देखता है, उन्हें रचनाकार 'डा0 कोहली जी' ने गहरा राजनीतिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आयाम प्रदान किया है। 'कैकेयी' और 'युद्धाजित' की कूटनीति जिस प्रकार अयोध्या की संपूर्ण व्यवस्था को प्रभावित करती है, कहीं न कहीं यह आधुनिक समय के राजनीति और शासकों के परिप्रेक्ष्य को जीवन्त कर देती है। लेखक 'डा0 कोहली' ने उपन्यास में 'राम' को जहाँ समतावादी, न्यायप्रिय और असुरों के विनाशक तथा राक्षसी सभ्यता के अत्याचारों, शोषण और उत्पीड़न से त्रस्त मानवता के उद्धारक एवं रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया है, तो वहीं 'राक्षसी सभ्यता' को आधुनिक संदर्भ में उपनिवेशवादी एवं पूंजीवादी शासक के शासन–व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में 'ऋषि–मुनियों' को सचेत बुद्धिजीवी के रूप में चित्रित किया गया है, जो जंगल में रहकर भी समाज के प्रति अत्यंत जागरूक रहते हैं। अतः उपन्यास के सभी चिर परिचित एवं काल्पनिक पात्रों की आधुनिक सृष्टि 'कोहली जी' के रामकथा में की गई है। नरेंद्र कोहली जी ने विविध पात्रों और प्रसंगों के माध्यम से इस बात पर विशेष बल दिया है कि प्रत्येक नागरिक को अपनी रक्षा का भार स्वयं उठाना चाहिए तथा अत्याचारों का विरोध करना चाहिए। डा0 कोहली के 'राम' राक्षसी सभ्यता के उन्मूलन द्वारा मात्र विजय के इच्छुक नहीं है अपितु; जनतंत्र पर आधृत शासन–व्यवस्था को स्थापित करने हेतु जनता को जागृत करके जन–क्रांति लाने के आकांक्षी हैं। इसलिए वह 'लक्ष्मण' से कहते है– ''सेना विजय दिला सकती है, क्रांति नहीं ला सकती; जनक्रांति जन जागृति से होती है और उसकी आकांक्षा जनता के भीतर से होती है।''[5] इस प्रकार 'राम' को आधुनिक 'जन–नायक' की सोच रखने वाले पात्र की भांति प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में 'सीता' के चरित्र में नारीत्व की सहजता एवं स्वाभाविकता के साथ उद्देश्यपूर्ण कर्मठता का सृजन हुआ है। वह अबला रूप में चित्रित नहीं है वरन् उन्हें राम से शस्त्र चलाने, नाव चलाने के प्रशिक्षण के साथ–साथ युद्धाभ्यास और संघर्ष प्रतिरोध का प्रशिक्षण लेते देखा जा सकता है। इस तरह 'अवसर' में नारी को पुरूष के समस्तर पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया है। 'सीता' के चरित्र में स्थित समकालीन नारी की छवि को प्रतिबिम्बित कर, लेखक ने आधुनिक संदर्भ में नारी–क्रांति के स्वर को मुखरित किया है।

अतः प्रस्तुत उपन्यास में डा0 'कोहली' ने अनेक युगीन प्रश्नों को जहाँ पात्रों के माध्यम से उठाया है; वहीं चिर–प्रसिद्ध आदर्श पात्रों द्वारा युगीन समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है। पुरूष–प्रधान समाज में नारी की निष्प्रयोजन भूमिका के प्रति आधुनिक नारी की विक्षोभ हो या फिर वर्त्तमान में टूटते हुए वैवाहिक सम्बन्ध हो; सभी आधुनिक समस्याओं को प्रस्तुत करने के साथ–साथ उसका समाधान भी 'अवसर' उपन्यास में बताया गया है। इस तरह 'अवसर' उपन्यास मूल रामकथा का पुनर्वाचन नहीं करता अपितु, उसके माध्यम से आज के युग की मुख्य समस्याओं को उजागर भी करता है। खुद 'नरेंद्र कोहली जी' कहते हैं कि ''यह कृति सर्वथा समकालीन, आधुनिक उपन्यास है ; जिसमें आधुनिक परिप्रेक्ष्य और मूल्य मानकों के आधार पर उस प्राचीनकथा के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है।''[6] अतः यह स्वीकार कियाा जा सकता है कि 'अवसर' रामकथा की परम्परा में एक विशिष्ट कृति है, जिसे समकालीन बोध के अनुरूप बनाना ही, इसकी अपनी विशिष्टता है।

'नरेंद्र कोहली' का तीसरा रामकथात्मक उपन्यास 'संघर्ष की ओर' 472 पृष्ठों का उपन्यास है। यह उपन्यास दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में 'पंद्रह अध्याय' तथा द्वितीय खण्ड में 'आठ अध्याय' है । प्रथम खण्ड में 'चित्रकुट प्रसंग' तथा 'पंचवटी प्रसंग' के मध्य की रामकथा का, काल्पनिक कथा–प्रसंगों व पात्रों द्वारा आधुनिक समस्याओं और संदर्भों की दृष्टि से तर्कसंगत विस्तार किया गया है। तो वहीं, उपन्यास के दूसरे खण्ड में 'पंचवटी प्रसंग' तथा 'सीताहरण की कथा' समाहित करके 'शूर्पणखा' जैसी नारी पात्रों द्वारा नारी के कामविह्वल रूप और दिग्भ्रमित नारीत्व का अत्यंत मार्मिक तथा मनोवैज्ञानिक चित्र प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के प्रथम खण्ड के सभी मुख्य पात्रों का संघर्ष क्षेत्र उनकी अपनी–अपनी परिस्थितियों एवं अनुकूलता का प्रतिफल है। एक ओर राम, रावण के वध के लिए प्रयत्न करते हैं। तो वहीं राम की जनवाहिनी, ऋषिगण, राक्षसों के आतंक के नाश के लिए संघर्ष करते हैं । इसी तरह 'शूर्पणखा' अपने प्रथम प्यार के वध की क्षतिपूर्ति के लिए विवश होकर संघर्ष करती हैं। इन संघर्षों के बीच उपन्यास के 'प्रथम खण्ड' में कथा का केन्द्रबिंदु राम और राम द्वारा चलाया जाने वाला जन–जागरण अभ्यान ही रहा है। इस तरह 'राम' यहाँ एक क्रांतिकारी न्याय के पक्षधर नायक के रूप में चित्रित किए गए हैं जो, अपने सुविकसित आयुधों, युद्ध–कौशल, अपराजेय साहस और अद्भुत कार्यक्षमता से शोषित एवं उत्पीड़ित जन साधारण की रक्षा राक्षसों से करते हैं। साथ ही उन्हें स्वयं आत्मरक्षा के लिए जागृत कर सशस्त्र जन–क्रांति हेतु संगठित करते हैं। वे उनमें अस्तित्व बोध और आत्मविश्वास उत्पन्न कर, उन्हें सामूहिक जीवन–विकास हेतु प्रोत्साहित करते हैं। वहीं मुनि 'धर्मभृत्य' 'राक्षस क्या होता है' उसकी आधुनिक परिभाषा देते नजर आये हैं। लेखक ने मुनि 'धर्मभृत्य' के माध्यम से राक्षसों को किसी एक जाति या वर्ग विशेष तक सीमित न रखकर वरन् समकालीन संदर्भ में जनता का शोषण करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को 'राक्षस' की संज्ञा से अभिहित किया है।''[7] इसी प्रकार 'राम' के मुख द्वारा 'उग्रानि' की राक्षसी व्यवस्था के मूल स्वरूप का उद्घाटन करवाते हुए कोहली जी ने आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था के स्वरूप का चित्रण किया है। 'राम' का उग्रानि की व्यवस्था के बारे में यह कहना कि– ''जाति कोई अर्थ नही रखती, मूल बात व्यवस्था की है। उग्रानि की व्यवस्था राक्षसी व्यवस्था थी, जिसमें एक व्यक्ति अनेक मनुष्यों के श्रम की आय को झपटकर उन्हें भूखा मारना चाहता है तथा स्वयं अपने लिए उस आय से विलास की सामग्री एकत्रित करना चाहता है। यदि कोई उसका विरोध करें तो वह हिंसा पर उतर आता है। शस्त्र शक्ति द्वारा दमन से वह अपने शोषण का क्रम चलाए रखना चाहता है।''[8] यह उत्पादन के साधनों पर एकाधिकार करके जनता का शोषण करने वाली आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था के वीभत्स रूप को उजागर करता है। इसके अलावे ''राम द्वारा उत्पादन के साधनों पर श्रमिकों के सामूहिक स्वामित्व की घोषणा, समाजवादी व्यवस्था के आदर्श रूप को प्रस्तुत करती है।''[9] इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास का 'प्रथम खण्ड' राक्षस बनाम पूंजीवादी निरंकुश शक्तियों के अन्याय, अत्याचार व शोषण के विरूद्ध संघर्ष करते राम की कथा को प्रस्तुत करता है, उनके बीच के संघर्षों को दिखलाता है। अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष करते 'राम' को ईश्वरत्व, धर्म और अध्यात्म से परे श्रममूलक और संघर्षशील मानवीय–मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाले 'जननायक' के रूप में चित्रित कर, पूरे संघर्ष को मानवीय धरातल पर प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास संघर्ष की ओर' उपन्यास में किया गया है।

इतना ही नहीं ऋषि 'अगस्त्य' को आचार्य के साथ–साथ एक योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो अपनी अपूर्व सैन्य–संगठन क्षमता के कारण राक्षस विरोधी मानसिकता तथा जन–जागृति के साधन बनते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के 'प्रथम खण्ड' में ऋषि 'अगस्त्य' के उनके चिंतनशीलता एवं कर्म पक्ष को देखते हुए वर्त्तमान संदर्भ में एक सचेत, जागरूक एवं क्रांतिचेता बुद्धिजीवी के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं 'ज्ञानश्रेष्ठ' एवं 'सुतीक्ष्ण' जैसे ऋषि आधुनिक युग के सुविधाभोगी, आत्मकेन्द्रित और तथाकथित शांतिप्रिय बुद्धिजीवियों के रुप में प्रस्तुत किये गए हैं, जो अपनी हितरक्षा के लिए न्याय के संघर्ष का प्रतिकार करते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत

उपन्यास के इस खण्ड में अनेक ऐसे पात्र आयें हैं जो काल्पनिक तौर पर लाये गयें हैं किन्तु, कहीं न कहीं ये सभी पात्र आधुनिक संदर्भ की दिशा में लेखक द्वारा गढ़े गये हैं। अतः 'संघर्ष की ओर' उपन्यास के इस खण्ड में 'शरभंग आश्रम' से लेकर 'अगस्त्य आश्रम' तक के संघर्ष की प्रमुख दिशा 'पूंजीवादी व्यवस्था रुपी राक्षसी सभ्यता के उन्मूलन' तथा 'जन–क्रांति' की रही है। किन्तु, लेखक ने ग्रामीण तथा शहरी संस्कृति के द्वन्द्व तथा नारी शोषण जैसे युगीन समस्याओं पर भी प्रकाश डालने की कोशिश की है। समाज के प्रत्येक वर्ग में हो रहे नारी शोषण का उद्घाटन लेखक ने 'अनुसूया' के माध्यम से किया है। उन्होंने न सिर्फ नारी के शोषण पर प्रकाश डाला है वरन् नर–नारी समानता के स्वरों को भी मुखरित किया है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत खण्ड के कथा क्रम में प्रौढ़ श्रमिकों की शिक्षा, भट्ठियों में धातुकर्मियों का निर्माण कार्य, कुटीर निर्माण, लकड़ी उद्योग, भूमि वितरण, कृषि विकास, सामूहिक शिक्षा, नवीन शिक्षा प्रणाली, स्त्रियों का नेतृत्व, सामाजिक उत्पादन, सामाजोत्पादन पर वाद–विवाद, संगीतशाला का उद्घाटन, हथियारबंदी रणनीति पर बहस, जन सेना इत्यादि अन्यान्य विकास एवं सुधार के क्षेत्रों के विस्तार को भी बड़ी कशलतापूर्वक नियोजित किया गया है। अतः उपन्यास के इस खण्ड में पहली बार 'राम' जैसे आदर्श पात्र यथार्थ रूप में जन–सामान्य के निकट खड़े दिखाई देते हैं।

'पंचवटी प्रसंग' तथा 'सीता हरण' की पौराणिक कथा को अपने मे समाहित करती 'संघर्ष की ओर' के 'दूसरे खण्ड' में प्रथम खण्ड के ही भांति राम 'अगस्त्य' ऋषि के आदेश से राक्षस पीड़ित पंचवटी को राक्षसों के आक्रांत से मुक्त कराने एवं उनसे संघर्ष की ओर एक और कदम बढ़ाने हेतु मोर्चा बनाते हैं। प्रस्तुत खण्ड में लेखक ने एक ओर जहाँ 'शूर्पणखा' को प्रौढ, धन–सत्ता एवं सेना सम्पत्ति के कारण क्रूर कामांध, विलासिनी नारी के रूप में चित्रित कर, कामविह्वल और दिग्भ्रमित नारीत्व रूप का अत्यन्त मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत किया है। वहीं, दूसरी ओर 'रावण' के भीतर के अंतर्द्वन्द्वों, क्षोभ, दर्प, मद, पश्चाताप, आत्मनिरीक्षण, भय, संदेह, आशंका, उग्रता इत्यादि विभिन्न भावों के उतार–चढ़ाव का कुशलतापूर्वक सूक्ष्म चित्रण भी प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत खण्ड का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष 'मारीच' तथा 'सीता–हरण' से संबंधित प्रसंग है, जिसमें कथा के प्रसंग को अत्यन्त कुशलतापूर्वक 'माया' एवं 'अतिमानवीयता' के जाल से पृथककर, उसे तथ्यपरक ढ़ंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। सीता–हरण प्रसंग में 'मारीच' स्वयं 'मायामृग' न बनकर, 'हेम मृग' के लोभ में लुभाकर राम को जंगल ले जाता है तथा वहीं सीता मृग को नहीं अपितु अत्यन्त देदीप्यमान 'मृगछालावत् आसन' को देखकर प्रभावित होती है, जिसे मारीच में उन्हें भ्रमित करने के उद्देश्य से धूर्ततापूर्वक बिछाया था। इसी प्रकार सीता–हरण के इसी प्रसंग मे 'सीता' हरण के पश्चात् भय से विलाप करती नजर नहीं आती अपितु, शस्त्र–संचालन कर रावण से आत्मरक्षा के लिए युद्ध करती है; जो इसे आधुनिक और प्रमाणिक बनाता है।

इस तरह 'संघर्ष की ओर' उपन्यास रामकथा के माध्यम से समसामयिक परिस्थितियों का चित्रण करने के साथ–साथ आधुनिक समस्याओं के संदर्भ में अपने युग के चिंतन को वाणी देने मे सफल रहा है। एक ओर जहाँ यह उपन्यास रामकथा को अलौकिक माया एवं अतिमानवीयता से मुक्त कराता है, वहीं इसे विश्वासनीय एवं प्रमाणिक भी बनाता है। अतः पाठकों का आधुनिक मन इस प्रमाणिक रामत्व और रामकथा को ससहज रूप में ग्रहण कर लेता है। पौराणिक घटनाओं का यह एक ऐसा तर्कसंगत, बुद्धिवादी, समाजशास्त्रीय, राजनैतिक और ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है ; जो बहुत आधुनिक प्रतीत होता है। इस प्रकार कहा जा सकता हैं कि 'संघर्ष की ओर' रामकथात्मक उपन्यास पौराणिक गाथा होते हुए भी; आधुनिक संदर्भ को समेटने का साहसिक एवं सार्थक प्रयास करता है।

इसी भांति 'युद्ध' उपन्यास रामकथा के औपन्यासिक रूप में लिखी जा रही उपन्यास– श्रृंखला का चतुर्थ खण्ड है, जो दो भागों में प्रकाशित है। ''इसमें रामकथा के 'किष्किंधा कांड', 'सुंदर कांड' तथा 'लंका कांड' की कथा समाहित है, जिसकी लेखक ने आधुनिक ढ़ंग से व्याख्या की है।''[10] 'युद्ध' अपने समग्र अर्थ में शोषकों के विरूद्ध, शोषितों का आधुनिक स्वातंत्र्य युद्ध है। 'युद्ध' (भाग–1) की मूल कथा में समकालीनता को समायोजित करने का प्रयास किया गया है। उपन्यास का आरंभ, विकसित पूंजीवादी राष्ट्र तथा अविकसित शोषित जाति के मूल द्वन्द्व से होता है। पूंजीवादी राष्ट्र 'लंका' का कूटनायक 'मायावी' शराब (सुरा) तथा सुंदरी के माध्यम से अविकसित राष्ट्र किष्किंधा के वानर सम्राट 'बालि' को फंसा कर पूर्ण रूप से अपनी तरह 'राक्षस' अर्थात् शोषक बना देता है। प्रस्तुत उपन्यास अनेक पूंजीवादी राष्ट्रों की सरकारों के अनेक आंतरिक एवं बाह्य नीतियों को उजागर करता है। एक ओर जहाँ 'सुग्रीव' के सत्ता पर बैठने पर, आधुनिक संदर्भ में आपातकाल के पश्चात् जनता में आये उत्साह को चित्रित करने का प्रयास हुआ है। तो वहीं, सत्ता परिवर्तनोत्तर दमन की विविध तत्कालीक राजनीतिक परिस्थितियों को प्रतिबिम्बित करने का प्रयास, सुग्रीव को सत्ता से हटाकर बालि के बैठने के माध्यम से की गई है। इस प्रकार 'युद्ध' उपन्यास के रामकथा की यह राजनीतिमूलक पुनर्रचना, आधुनिक संदर्भो में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती है।

प्रस्तुत उपन्यास के इस खण्ड में राम एक बार फिर दण्डकारण्य की भांति सामाजिक नव–निर्माण का कार्य करते हुए नजर आये हैं। 'बालि–वध' के पश्चात् प्रस्रवणगिरि में भी राम के सानिध्य में संपन्न होने वाले शिविर के जीवन, सामूहिक व्यायाम, शस्त्राभ्यास, विविध प्रशिक्षण, शस्त्र निर्माण, भट्ठी संचालन, धातु भण्डार की खोज एवं उसकी खुदाई, कृषि विकास, सेना–संगठन तथा व्यापक स्तर पर शिक्षा के प्रचार संबंधी कार्यों के माध्यम से आधुनिक संदर्भ में सामाजिक नव–निर्माण को उद्घाटित किया गया है। इस प्रकार पौराणिक रामकथा में नवीन प्रसंगों की उद्भावना कर उसे आज के संदर्भ में प्रस्तुत कर तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत कराने का प्रयास किया गया है, जिसमें लेखक डा0 कोहली को पूर्णतः सफलता प्राप्त हुई है।

युद्ध' उपन्यास के सभी चिर प्राचीन पात्र एवं काल्पनिक पात्रों की मनोस्थिति का मानवीय एवं मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रण प्रस्तुत किया गया है। सीता की खोज में निकले 'अंगद' का सफलता–असफसलता को लेकर भविष्य की आशंकाओं में डूबने के वर्णन के माध्यम से 'आधुनिक युवाओं' के तनाव–भटकाव को प्रस्तुत किया गया है। सभी पात्र पौराणिक चरित की भूमिका से बाहर आते दिखाई पड़ते हैं। 'सीता' का चरित्र आधुनिक नारी का चरित्र प्रस्तुत करता है। 'सीता' आधुनिक नारी की भूमिका में बंधकर, नारी की मुक्ति एवं उसके संघर्ष की तीव्र अभिलाषा का व्यक्त करती है। उनके मन में समाज में व्याप्त स्त्री–पुरूष के लिए दोहरे नैतिक मापदण्डों के प्रति आक्रोश का भाव है। इधर उपन्यास के एक अन्य पात्र 'विभीषण' भक्त के रूप में नहीं अपितु, मानवतावादी आदर्श के रूप में चित्रित हैं ; जो लंका में बढ़ती हुई विलासिता, भ्रष्टाचार, अपराध वृद्धि के प्रति गहन चिंता व्यक्त करता है। उसकी यह चिंता आधुनिक संदर्भ के बुद्धिजीवियों की चिंता के रूप में प्रस्तुत हुई है। इसके अतिरिक्त 'हनुमान' को देवरूप या अतुलित बलशाली और राम के अनन्य भक्त के रूप में नहीं वरन् एक आधुनिक योद्धा तथा उच्च राजनीतिक अधिकारी के रूप में चित्रित किया गया है। इस प्रकार 'युद्ध' उपन्यास के 'प्रथम खण्ड' में राम की मुद्रिका लिए हनुमान द्वारा सागर संतरण तथा सीता संधान के प्रसंगों का लौकिक, तर्कसम्मत एवं बुद्धिग्राह्य व्याख्या करते हुए; परम्परागत रामकथा के अलौकिक प्रसंगों को विश्वसनीय व प्रमाणिक रूप में

प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास डा0 कोहली जी द्वारा किया गया है।

'युद्ध' (भाग–2) में भी 'ब्रह्मास्त्र व अन्य दिव्यास्त्रों', 'लंका दहन', 'सागर विनय', 'सेतुबंध' तथा 'संजीवनी' आदि को लौकिक, प्रमाणिक एवं विवेक–सम्मत आधार देने का प्रयास किया गया है। डा0 कोहली ने 'सागर विनय' को जहाँ व्यापारिक जल पतनों, नौकाओं के संधान तथा उसके विषय में बातचीत के रूप में प्रस्तुत किया है । तो वहीं, 'सेतुबंध प्रसंग' में सेतु के निर्माण के लिए पत्थरों के इस्तेमाल की कल्पना करके, उसे प्रमाणिक एवं विवेकसम्मत दिखलाने की कोशिश की है। इसी प्रकार 'संजीवनी' को 'विषल्यकर्णी' एवं 'दिव्यास्त्रों' व 'देवास्त्रों' को यंत्रों के रूप में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार रामकथा के अविश्वसनीय अंशों को प्रमाणिक तथा बुद्धिग्राह्य अर्थ प्रदान करने में कोहली जी की यह उपन्यास काफी हद तक सफल रही है। समकालीन नारीवादी विमर्श के स्वरों की उद्घाटन भी इस उपन्यास के भाग में देखने को मिलती है।

अंततः समग्र रूप में 'युद्ध' (भाग–1 एवं भाग–2) उपन्यास का विवेचनात्मक अध्ययन किया जाय तो कहना गलत नहीं होगा कि इस रामकथात्मक उपन्यास में अतिमानवीयता एवं अलौकिकता को पूर्ण रूप से तिरस्कृत कर, परम्परागत रामकथा को सर्वत्र लौकिकता, तर्कसंगत एवं मानवीय आधार पर व्याख्यायित करते हुए 'राम–रावण युद्ध' को समकालीन संदर्भ में पूंजीवादी व्यवस्था के प्रति शोषितों के स्वातंत्र्य युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष

रामकथा के रचना के क्रम में 'राम' के चरित्र को अवतारत्व, ईश्वरत्व ओर चमत्कारी, अविश्वसनीय मिथकों से अलग कर इसे युगीन परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से प्रस्तुत करने वाले 'डा0 नरेंद्र कोहली जी' ने अपनी कृति 'अभ्युदय' (दो खण्ड) के 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' तथा 'युद्ध–1' एवं 'युद्ध–2' नामक उपशीर्षक में समग्र रामकथा का युगानूकुल वर्णन प्रस्तुत किया है।

'अभ्युदय' के प्रथम खण्ड के 'दीक्षा', 'अवसर' और 'संघर्ष की ओर' उपन्यास तथा 'अभ्युदय' के द्वितीय खण्ड के 'युद्ध–1' एवं 'युद्ध–2' मे कोहली जी ने मूल रामकथा को तर्कसंगत एवं आधुनिक ढ़ग से प्रस्तुत किया है। एक ओर जहाँ 'दीक्षा' उपन्यास में 'विश्वामित्र' के सिद्धाश्रम में राक्षसों के उत्पात के परिणामस्वरूप होने वाले सद्मूल्यों के हनन और राक्षसी वृत्तियों के आतंक के विस्तार को देखने–परखने और उसका प्रतिरोध करने की दीक्षा, ऋषि 'विश्वामित्र', राम को देते हैं।

वहीं, 'अवसर' उपन्यास में राम को 'रामत्व' प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। 'राम' को 'विश्वामित्र' से जो क्रांति की दीक्षा मिली, उसी से सामाजिक क्रांति को लाने का अवसर उन्हें प्रस्तुत उपन्यास में मिला। इसके अलावा 'अयोध्या नगरी' की राजनीतिक गतिविधियों, 'कैकेयी', 'कौशल्या', 'सुमित्रा' आदि की मानसिक स्थितियों तथा 'राम', 'लक्ष्मण', 'सीता' के चिंतन एवं राक्षसों द्वारा सताये जाने वाले ऋषियों के चित्कार को भी प्रस्तुत उपन्यास में रेखांकित किया गया है।

रामायण के अरण्यकाण्ड की कथा को समेटे 'संघर्ष की ओर' उपन्यास, महाशक्तियों के जुल्म से पीड़ित बुद्धिजीवी, खान श्रमिकों के आंदोलन, कृषकों का भूमि के लिए संघर्ष, जन सामान्य की सशस्त्र सेनाएँ, महाशक्तियों के सैनिकों को जनसामान्य की सेनाओं द्वारा धूल चटाने जैसे आधुनिक प्रसंगों को अपने में निहित कर, वर्तमान युग के चिंतन को वाणी देती है।

तो वहीं 'युद्ध' भाग–1 और 'युद्ध' भाग–2 उपन्यासों में 'किष्किंधा', 'सुंदर कांड' और 'लंका कांड' की कथा बोधगम्य तरीके से प्रस्तुत की गई है। 'युद्ध' भाग–1 में बालि द्वारा मायावी असुरों का वध, सुग्रीव का राज्याभिषेक, बालि का आक्रोश, सुग्रीव की पत्नी का अपहरण, राम–सुग्रीव भेंट, राम द्वारा बालि का वध, हनुमान का सीता– संधान के लिए लंका जाकर सीता की खोज करना , लंका–दहन, सीता–रावण संवाद, सीता द्वारा रावण को युद्ध की चुनौती देना और अंत में रावण पर राम की विजय प्राप्त करना आदि घटनाएँ तर्कसंगत एवं विवेकपूर्ण रूप से वर्णित की गई है।

इस प्रकार 'विश्वामित्र' के आगमन से लेकर 'रावण' के वध तक की प्रख्यात पुरा कथा के सभी प्रसंग 'वाल्मीकि रामायण' पर आधारित है। किंतु उसमें कुछ नयी घटनाओं और व्यापारों की उद्भावना करके परंपरागत प्रसंगों से कुछ हटकर कथानक को विस्तार दिया गया है। संपूर्ण रामकथात्मक उपन्यासों में चित्रित ये कथानक ; देश की समसामयिक परिस्थितियों को लिये हुए आधुनिकता का आभास कराती हैं। इसकी कथावस्तु के विविध प्रसंगों मे मार्क्सवाद, पूंजीवाद, मनोविश्लेषण इत्यादि आधुनिक धारणाओं का प्रभाव भी दिखायी पड़ता है; जो कथा को पौराणिकता से आधुनिकता की ओर ले जाती है। अंततः कहना गलत नहीं होगा की 'डा0 कोहली' कृत पाँचों रामकथात्मक उपन्यास 'वाल्मीकि' के रामकथा पर आधृत होते हुए भी 'रामकथा की पुनर्व्याख्या' हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डा0 प्रदीप लाड, नरेंद्र कोहली के उपन्यासों का अनुशीलन, अभय प्रकाशन ,सं0 2012 पृष्ठ स0 88
2. पूर्ववत्, पृष्ठ स0 88
3. के0 सी0 सिंधु ,रामकथा कालजयी चेतना ,पुरोवाक् ,वाणी प्रकाशन, सं0 2007
4. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय–1, (अवसर), पृष्ठ सं0 243
5. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय–1, (अवसर), पृष्ठ सं0 244
6. प्रा0 डॉ0सौ0 माधवी रूपवाल, नरेंद्र कोहली के उपन्यासः समकालीन सरोकार अन्नपूर्णा प्रकाशन, सं– 2009, पृष्ठ सं0 22
7. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय (खण्ड–1), सं0 2014, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा0) लि0 प्रकाशन पृष्ठ सं0 402
8. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय (खण्ड–1), सं0 2014, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा0) लि0 प्रकाशन, पृष्ठ सं0 405
9. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय (खण्ड–1), सं0 2014, डायमंस पॉकेट बुक्स (प्रा0) लि0 प्रकाशन, पृष्ठ सं0 442
10. डा0 प्रदीप लाड ,नरेंद्र कोहली के उपन्यासों का अनुशीलन, सं0 2012 ,अभय प्रकाशन ,पृष्ठ सं0 89